ISSN–2278-5655

AMIERJ

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–X, Issues– I Jan-Feb 2021

समकालीन मन्नू भंडारी जी की कहानियों में चित्रित महानगरीय जीवन

डॉ.विद्या शशिशेखर शिंदे

आय.सी.एस.कॉलेज,खेड,खोंडा भडगांव,ता.खेड 415709

Abstract

मन्नूजी महानगरीय विसंगतियों और विषमताओं की सूक्ष्म दृष्टा ही नहीं वरना चिंतक भी हैं.आज भूमंडलीकरण के कारण पाश्चात्य देशों की समस्याएँ केवल उनकी अपनी समस्याएँ न रहकर वह विश्वव्यापी हो गयी हैं. यह इनकी कहानियों से पता चलता हैं.इसमें कोई शक नहीं है कि मन्नूजी ने भारतीय समाज के बदलते चेहरे को अपनी कहानियों के माध्यम से उच्च बनाया हैं.भारतीय समाज में युग परिवर्तन की प्रक्रिया युगों से चली आ रही हैं. इस बात को केंद्र मे रखकर देखे तो मन्नूजी की कहानियों में यह बात स्पष्ट रुप में झलकती है.महानगरीय चकाचौंध के पीछे छिपे अंधकार से बेखबर ग्रामीण व्यक्ति अपनी परंपरा तथा परिवेश से कटकर शहर की तरफ दौडा जा रहा हैं. वहाँ पहुँचने के बाद इन लोगों के भीतर घुटन महसुस होती है उसका वर्णन करके महानगरीय संस्कृति का बदलता परिवेश मन्नू भंडारी जी ने व्यक्त किया हैं.

उद्देश्य –

1. ग्रामीण लोगों का शहर की तरफ आकर्षित होना.
2. महानगरीय परिवेश को व्यक्त करके कहानिकार की संवेदना को प्रस्तुत करना.
3. कहानियों के माध्यम से महानगरीय समस्याओं को चित्रित करना.
4. कहानियों द्वारा मूल्यों के विघटन को उजागर करना.

Aarhat Publication & Aarhat Journals **is licensed Based on a work at** *http://www.aarhat.com/amierj/*

प्रास्ताविक –

साहित्य में कहानी समृद्ध और सामान्य जनता में सबसे लोकप्रिय विधा मानी गयी हैं.साहित्य की अनेकविध विधाओं में कहानी का अपना अलग स्थान हैं. कहानी का आविर्भाव जीवन के सच्चाई के साथ उजागर होता हैं. कहानी अपने कम शब्दों में सारे संसार को समेटने की कोशिश करती हैं. कहानिकार अपने आसपास घटीत,यथार्थ कथासूत्र को अपनाता हैं. भागती दौडती जिंदगी के विभिन्न पक्षों का विस्तृत गहन और सूक्ष्म विश्लेषण कहानी के माध्यम से किया जाता हैं.'शहरीकरण' आज विश्वरुपी जाल बनती जा रही हैं. भारत के आजादी के पश्चात् शिक्षा ओर औदयोगिकरण के विकास ने गॉववालों को अपनी ओर आकर्षित किया

ISSN–2278-5655

AMIERJ

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–X, Issues– I Jan-Feb 2021

जिससे एक जगह पर हो रहे विकास प्रकिया ने नगर तथा महानगरों को जन्म दिया हैं.शहरी संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव अधिक दिखाई देता हैं.उसे भोगवादी संस्कृति भी कहा जाता हैं. आधुनिक काल में महानगर अर्थसंचय,भौतिक सुख–सुविधा तथा महत्वाकांक्षा के केंद्रबिंदू बने हुए हैं. सुख सुविधाओं के बढते साधनों के साथ–साथ महानगरों में अनेक समस्याएँ निर्माण हो रही हैं.उसमें बेकारी,भुखमरी,अपराधीकरण,आवास समस्याएँ बढती जा रही हैं. इन महानगरीय समस्याओं को मन्नू भंडारी जी ने बडी संवेदनशीलता तथा ईमानदारी के साथ अपनी कहानीयों में चित्रित किया हैं.

महानगरीय व्यक्ति एवं परिवार के बदलते संबंध

सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव भारतीय संयुक्त परिवार प्रणाली पर भी पडा हैं. भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार समाज की बडी इकाई माना जाता था. किंतु औदयोगीकरण एवं नगरीकरण की प्रभावों ने आज संयुक्त परिवार प्रणाली को परिवर्तित करना शुरु कर दिया हैं. महानगरीय समस्याओं ने पारिवारिक संबंधों में एक तनाव की स्थिति पैदा कर दी हैं. परिवार विघटन का मुख्य कारण आर्थिक दबाव हैं. विघटन परिवार,मोहल्ले समाज या देश का किसी का भी हुआ हो वेदना एक समान होती हैं. मन्नूजी ने पारिवारिक विभाजन में अर्थ की भूमिका को महसूस किया हैं और भोगा भी हैं. उनकी मजबूरी,शायद, अभिनेता आदी कहानियों में इनकी सूक्ष्म अभिव्यक्ति हुई हैं.

'मजबूरी' कहानी की बुढी अम्मा पुत्र,बहू ओर पोता होने के बावजूद भी गॉव में अकेली रहने के लिए विवश हैं. बूढी अम्मा अपनी विवशता प्रकट करती हुई कहती हैं –''मेरे पास लाखों का धन होता तो बेटे को यों नौकरी करने परदेश नहीं दुरा देती पर –––.''1 आज के अर्थ प्रधान युग में हमारे सारे रिश्तें नातों का आधार आर्थिक हो गया.व्यक्ति ऑखें बंद किए पैसे के पीछे भाग रहा हैं.''शायद कहानी का राखाल भी रोजगार की तलाश में परिवार से दूर चला जाता हैं. आर्थिक संकट के कारण पारिवारिक दूरियॉ बढती हैं और आत्मीयता का भाव खत्म हो जाता हैं. इस कथन में राखाल की मानसिकता प्रकट होती हैं –''जहाजवालों को तो शादी करनी ही नहीं चाहिए. वहॉउरात–दिन मशीनों से सिर फोडो पैसा मिले तो घरवालों की हाजिरी में.''2

पाश्चात्य व्यक्तिवादी भावनाओं के अनुकरण के कारण भारत में संयुक्त परिवार का विघटन होने लगा हैं. संयुक्त परिवार में वैयक्तिक भावों पर नियंत्रण रहता हैं जो आज की नारी को मंजूर नहीं हैं.आधुनिक काल में नारी की बढती महत्वाकांक्षा,अहम् और परंपराओं के प्रति नकारात्मक भावों ने नारी को पारिवारिक एकता से दूर कर दिया हैं. कमरे ,कमरा और कमरें कहानी में नीलू नौकरी के लिए दिल्ली चली जाती हैं. वह धीरे–धीरे घर से दूर रहने लगती हैं. परिवार विघटन का एक कारण पती–पत्नी का अहम् भी होता हैं. 'दरार भरने की दरार' कहानी में दो व्यक्ति के अहम् के कारण पैदा हुए झगडे को चित्रित किया गया हैं. इस प्रकार देखे तो आधुनिकीकरण एवं महानगरीकरण की जटिलताओं ने व्यक्ति के परिवार तथा संबंधों पर

ISSN–2278-5655
AMIERJ
Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
Volume–X, Issues– I Jan-Feb 2021

सर्वाधिक प्रभाव डाला हैं. मानवीय संबंधों में अजीब किस्म का ठंडापन आने लगा हैं. शहरों में रहनेवाले व्यक्ति के लिए घर आश्रय स्थान या ख्वाबगाह न रहकर आसरा बन गया हैं. ऐसे परिवेश में मानव संबंधों के महीन धागे टूट रहे हैं और इससे अलगाव या विघटन की स्थिति निर्माण हो रही हैं.

पीढियों में अन्तराल एवं संघर्ष –

वर्तमान समय में शिक्षा का व्यापार बढ रहा हैं. भारतीय समाज में दो पीढीयों के बीच संघर्ष की प्रवृत्ति को गति मिली हैं. पारिवारिक शिथिलता का एक कारण दो पीढियों का संघर्ष भी हैं. इसपर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए डॉ. बैजनाथ प्रसाद शुक्ल लिखते हैं– ''परिवार का सबसे बडा व्यक्ति अब उसका स्वामी नहीं रह गया जिसके पैसे के आश्रय में परिवार पलने लगा. घर की मालकिन अब सास नहीं बहू हो गयी, क्योंकि उसका पति कमाता हैं और पूरे परिवार का भरण पोषण करता हैं. 3 आज पारंपारिक संस्कार पुरानी पीढी तक ही सीमित रह गये हैं. आधुनिकता का अंधानुकरण बाप–बेटे में अंतर पैदा कर रहे हैं. लडका लडकीयॉ अब घर से निकलकर लोंगों के साथ स्वच्छंद रुप से मिलने–जुलने लगे हैं. अपने जीवन के संबंध में लिए जानेवाले फैसले का अधिकार मॉ–बाप से छिनकर युवाओं ने अपने पास ले लिया हैं. शिक्षा, विवाह, एवं व्यवसाय जैसे महत्वपूर्ण निर्णयों में वयोवृद्ध सदस्यों की सत्ता निश्चित रुप से कम हुई हैं. सिनेमा,होटल,पाश्चात्यों का प्रभाव और नियंत्रण कम हो रहे हैं. स्वतंत्रता और उन्मुक्त भोग की भावना से परिवार में संघर्ष बढ रहा हैं. मन्नु भंडारी जी की 'त्रिशंकु' कहानी एक वर्तमान सत्य को उद्घाटीत करती हैं. तनु के नाना परंपरा को अपनानेवाले हैं और तनु आधुनिकता को अपनाती हैं. ऐसी स्थिति में संघर्ष अनुभव होता हैं. क्या करुॅ या क्या न करुॅ? वह न इस स्थिति को स्वीकार पा रही थी और न अपने ही द्वारा बडे जोश से शुरु किये इस सिलसिले को नकार ही पा रही थी.4

'तीसरा हिस्सा' कहानी में पिता–पुत्र का संघर्ष व्यक्त किया हैं. कहानी का नायक शेरा बाबू रात को देर से लौटे अपने बेटे को सुधीर को डॉटते हैं. पूछने पर 'यह टाइम है घर लौटने का?' बेटा उल्टा जवाब देता हैं. वह कहता है,''टाईम!'' अरे घर लौटने के टाईम का नियम तो एमरजेंसी के दौरान भी नहीं बना था. जाइए,जाकर सो रहिए.''5नई पीढी अपना रास्ता खुद तराशना चाहती हैं. वह अपने कार्यो में किसी की दखलअंदाजी नहीं चाहती.

स्त्री–पुरुष संबंधों में बदलते प्रतिमान–

सृष्टी का आधार स्त्री–पुरुष हैं. आधुनिक परिवार में स्त्री–पुरुष को समान अधिकार मिलने से उनके संबंधों में बडा भारी परिवर्तन देखने को मिल रहा हैं.स्त्री–पुरुष समान रुप से जीवन को भोगने लगे हैं. उन्मुक्त संबंधों को आधुनिक सभ्यता का वेश पहनकर अब भारतीय संस्कृति को धराशयी किया जा रहा हैं. समाज में पतिव्रता की परंरागत धारणाएॅ टूटती जा रही हैं. पाश्चात्य प्रभाव से नैतिकता की परिभाषा ही बदल गयी हैं. एकनिष्ठता की मॉग अब अनुचित प्रतीत होती हैं. अब यह स्वीकार्य है कि पति और प्रेमी दो पृथक–पृथक

ISSN–2278-5655
AMIERJ
Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
Volume–X, Issues– I Jan-Feb 2021

वक्ति हो सकते हैं.''6 पति–पत्नी एक छत के नीचे रहते हुए भी दोनों के बीच संबंधों का बिखराव नजर आता हैं. मन्नूजी भंडारी की 'बंद दराजों का साथ', 'यह सच है','उॅचाई', 'तीसरा आदमी', 'एक कमजोर लडकी की कहानी', 'कील और कसक', आदी कहानियों में प्रेम संबंधों में आये बदलाव का चित्रण किया गया हैं.

मन्नूजी की 'तीसरा आदमी' कहानी में विवाहेत्तर प्रेम का चित्रण हैं. शकुन जब विवाह के कई साल बाद भी मातृत्व ग्रहण नहीं कर सकती तो आलोक की तरफ झुकती हैं. सतीश इस स्थिति को अनदेखा नहीं कर सका और एक दिन दोनों से कहता हैं,''देखिए मुझे सबकुछ मालुम हैं. बंद दरवाजे ऐसी बातों को छिपाकर नहीं रख सकते.आप लोग 'एक्टींग' करने में बहुत माहिर होंगे पर मेरी ऑखें कम तेज नहीं. शकुन चाहे तो आपके साथ जा सकती हैं. मुझमें इतनी उदारता है कि मैं अपनी पत्नी की राह में बाधा बनकर खडा न होउॅ,उसकी इच्छा पूरी करने में सहायक बनूॅ.7वर्तमान नारी इतनी स्वच्छंद हो गई है कि पति के अतिरिक्त वह जब चाहे स्वेच्छा से किसी को भी अपना शरीर समर्पित कर संबंध स्थापित कर सकती हें. आजकाल यौन–वासना की तृप्ति पर बडा जोर दिया जा रहा हैं. इन मुक्त विचारधारा ने पति–पत्नी में यौन संबंध बढते जा रहे हैं. इन मुक्त विचारधारा ने पति'पत्नी में यौन वैषम्य की समस्या उत्पन्न हो रही हैं. मित्रता के नाम पर शारीरिक छुट की हिमायत करते हुए डॉ. वीरेंद्र सक्सेना लिखते है–''पुरुष लेखकों के साथ–साथ महानगरों में रहनेवाले और उन पर लिखने वाली लेखिकाओं ने भी जीवन में आए परिवर्तनों तथा गतिशीलता को देखते हुए इस बात का पक्ष लिया है कि मित्रता के रुप में विकसित शारीरिक संबंधों पर कोई आपत्ति नहीं की जानी चाहिए.''8

घुटन,तनाव तथा कुंठा का चित्रण–

घुटन,तनाव एवं कुंझा आधुनिक महानगरीय जीवन की उपज हैं. महानगरीय इन्सान रात–दिन कोल्हू के बैल की तरह घूमकर पेट भरता हैं. आज की जिंदगी में अत्याधिक व्यस्तता है, अनिश्चिंता,भाग–दौड हैं दृ तथा अपने अस्त्वि को बनाए रखने का संघर्ष है,फिर भी खुशियॉ प्राप्त नहीं होती जिससे व्यक्ति के अंदर घुटन पैदा होती हैं. लक्ष्यहीनता की स्थिति में महानगरीय इन्सान तनाव का शिकार हो रहा हैं.

'घुटन' कहानी में दो भिन्न स्थितियों में जीवन व्यतीत करनेवाली दो नारियों के घुटन को प्रस्तुत किया गया हैं. विवाहिता प्रतिमा दाम्पत्य जीवन को बोझ समझती हैं. सामाजिक डर से दाम्पत्य संबंधों को ढोह रही हैं. उसे मद्यपान करनेवाले पति से नफरत होने पर भी कुछ न करने का दर्द साल रहा हैं.वह पति के फौलादी बॉहों में समा जाने के लिए तैयार है, तो अविवाहिता मोना अपने प्रेमी की बॉहों में समा जाने के लिए तैयार है, किंतु इसमें घरवाले वाहक बने हुए हैं.दोो की घुटन को मन्नूजी इस प्रकार व्यक्त करती हैं–

''और उससे अधिक घुटन भी प्रतिमा के मन में, जा प्रतिमा के मन में, जो पति की जरुरत से ज्यादा बॉहों में जकडी हुई तडप रही थी मुक्ति के लिए ओर शायद उससे भी ज्यादा घुटन थी और जिसके लिए

ISSN–2278-5655

AMIERJ

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–X, Issues– I Jan-Feb 2021

अलसाए अंग तडप रहे थे,कसमसा रहे थे किसी भी बॉहों में जकड जाने के लिए.''9

'क्षय' कहानी की कुंती बीमार पिता क्षय रोगी है और छोटे भाई की आवश्यकता की पूर्ति करते करते यंत्रणा का शिकार हो जाती हें. वह भी मुक्त जीवन का हिस्सा बनकर उडना चाहती हैं,पर जिम्मेदारियों से मुक्त नहीं हो पाती और बोझ तले घुटन एवं तनाव महसूस करने लगती हैं.

अकेलापन –

महानगरों के मानव के पास सब कुछ होते हुए भी वह अकेला हैं. आधुनिकता बोध, संबंधों में आये बिखराव,मूल्य संक्रमण आदी ऐसे तत्व है जो अकेलेपन का एहसास देते हैंकृसमें भी अब कुंठा,परायापन, तनाव, अलगाव,आदी अकेलेपन तक पहुॅचने में निर्णायक भूमिका अदा करते हैं. संयुक्त परिवार का विघटन गॉव से अधिक महानगरों में देखा जा सकता हैं..परिणामस्वरुप महानगरीय व्यक्ति को अपना दुःख दर्द बॉटने के लिए कोई स्वजन नहीं मिलता. महानगरीय मानव अपनी समस्याऍ, दर्द, व्यस्तता, तनाव आदि में सिमटकर एक दिन हदयहीन तथा संवेदहीन हो जाता हें.

'शायद' कहानी का नायक राखाल सीमित आमदनी के कारण पारिवारिक जिम्मेदारियों को ठिक ढंग से नहीं निभा पाता त बवह परिवार के बीच भी अपने आपको अकेला महसूस करता हैं. ''रो धोकर माला तो सो गई पर राखाल को किसी तरह नींद नहीं आई. अभी तो नहीं लग रहा है कि यह घर में हैं. अभी भी यह लग रहा हैं,मानो वह जहाज में बैठा है और उसे और माला के बीच बहुत–बहुत दूरियॉ हैं. 10

'अकेली' कहानी की सोमा बुआ पुत्र के मृत्युपरांत और पति के संन्यासी हो जाने के बाद अकेलेपन के बोघ से ग्रस्त हो जाती हैं. वह समाज के अच्छे–बुरे प्रसंगों में सम्मिलित होकर भी अकेलेपन की पीडा को मन्नूजी ने कहानी के आरंभ में इस प्रकार व्यक्त किया हें.–

'' सोमा बुआ बुढिया हैं।

सोमा बुआ परित्यक्ता हैं।

सोमा बुआ अकेली हैं।''11

ठस प्रकार अकेलापन आज के युग का सामाजिक यथार्थ हैं. महानगरों में रहनेवाले अधिकांश इस बोध से ग्रस्त है, क्योंकि महानगर भीड का जंगल हैं. यहॉ किसी से कोई सरोकार नहीं. पैसों की दौड में वे सारे रिश्ते–नाते को भूल रहा हैं या तोड रहा हैं.ऐसी स्थिति में महानगरीय मानव हताश,पराजय और अकेलापन महसूस करता हैं. मन्नू भंडारीजीने अपने कहानीयोंद्वारा यह बताया हैं.

मूल्यों का –हास –

महानगरीय जीवन की सबसे गंभीर तथा चिंतनीय समस्या मुल्यों का –हास हैं. नगरों में मुल्यों का नैतिक पतन हो चुका हैं. पुराने मुल्य तेजी से टूअने लगे हैं. आज के वैज्ञानिक युग में नैतिक मूल्यों की रुढी को स्वीकार जाने की प्रवृत्ति का विरोध होने लगा हैं. व्यक्ति में मानव सहज संवेदना का भी अभाव दिखाई देता

ISSN–2278-5655

AMIERJ

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–X, Issues– I Jan-Feb 2021

हैं. प्रेम, करुणा, दया, त्याग जैसे स्थापित मूल्यों को महानगरीय मानव रौंदता चला आ रहा हैं. परिवार में बडों का आदर करना, प्रणाम करना,उॅची आवाज में न बोलना, किसी का विरोध किये बिना उनकी बात को स्वीकारना आदि पिछडेपन का प्रतिक माना जाता हैं. युवा पीढी हाय, हॅल्लो और बाय की संस्कृति को अपना रही हैं.

मन्नूजी 'दो कलाकार' कहानी में ऐसे ही महानगरों की खोई हुई दिशाहीन समाज की कथा हैं. प्रस्तुत कहानी में मानवीय असंवेदना को बारीकी से उभारा हैं. 'गर्ग स्टोर के सामने पड के नीचे अक्सर एक भिखारीनी बैठती थी, लौटी तो देखा वह मरी पडी हैं और उसके दोनों बच्चे सुखे शरीर से चिपककर बुरी तरह से रो रहे हैं.''12

'खोटे सिक्के' कहानी में जिम्मेदारियों से मुॅह मोडते हुए खन्ना साहब कहते हैं.–''टॉगे कट गयी तो हमने दो सौ रुपये मुआवजे के दे दिये और हम कर भी क्या कर सकते हैं? यों इन लोगों को यहॉ बिठाना शु कर दे तो टकसाल अपंगों का अड्डा ही बन जाए. आए दिन ऐसी दुर्घटनाएॅ होती रहती हैं.''13

हमें लगता हैं कि औरत की सबसे बडी दुश्मन औरत ही हैं. वही चारो ओर उसकी बदनामी करती हैं. इस तथ्य को 'रानी मॉ का चबूतरा' कहानी में सूक्ष्मता से रेखांकित किया गया हैं. इसकी नायिका गुलाबी एक आत्मनिर्भर मजदूरीन हैं. अपने बच्चों के सुरक्षित भविष्य के लिए शराबी पती से अलग रहती हैं. समाज उसे कुल्टा कहकर पुकारती हैं.इससे स्पष्ट हां जाता है कि शहरों में उच्च सामाजिक मूल्यों का विघटन हो रहा हैं. मानवता के उच्च धर्म के मूल्य एवं मान्यताएॅ समाप्त होती जा रही हैं.

निष्कर्श –

स्वाधीनता के पश्चात् पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण,औद्योगीकरण तथा भूमंडलीकरण के परिणामस्वरुप महानगरीय समाज अनेक प्रकार की समस्याओं से घिर गया हैं. मन्नूजी की कहानियों में जीवन संघर्ष तथा भौतिकवादी दृष्टिकोन का चित्रण गहराई से हुआ हैं. महानगरीय जीवन का खुला एवं भोगवादी नजरिया समाज में विकृति फैला रहा हैं. महानगर सभ्य एवं संस्कृति का केंद्र न होकर बाजार अधिक दिखता हैं. बाजारवाद के गंभीर दुष्परिणामों के प्रति हमें सचेत होना पडेगा.क्योंकि खतरे की घंटी मन्नूजी की कहरनियों में साफ सुनाई देने लगी हैं.हम पश्चिमी अवधारणाओं से प्रभावित कम,चमत्कृत अधिक होते हैं. यह भी नहीं देख पाते कि इन नये विचारों की हमारी सोच और जीवन के साथ तालमेल भी है या नहीं. मन्नूजी की कहरनियॉ महानगरीय जीवन के विपरीत उॅचाई पर खडे असहाय, अकेले व्यक्ति की कहानियॉ हैं, जिसमें वर्णित यथार्थ को जानने के पश्चात् नगरों एवं महानगरों में हमेशा के लिए न जाने या वहॉ से लौटने के पनर्विचार हेतु विवश करती हैं.

संदर्भ –

तीन निगाहों की एक तस्वीर,संग्रह –मजबूरी–मन्नू भंडारी–पृष्ठ 105

ISSN–2278-5655

AMIERJ

Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–X, Issues– I Jan-Feb 2021

त्रिशंकु,संग्रह शायद–कहानी,मन्नू भंडारी–पृष्ठ 91

भगवतीचरण के उपन्यासों में युग चेतना–डॉ.बैजनाथ प्रसाद शुक्ल पृष्ठ 67

हिंदी उपन्यास में पारिवारिक संदर्भ– डॉ.उषा मंत्री,पेपर बैंक

मेरी प्रिय कहानियॉ,संग्रह,सजा,कहानी,मन्नू भंडारी,पृष्ठ 91

हिंदी उपन्यास –सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया और स्वरुप–प्रभा वर्मा,पृष्ठ 145

यही सच है,संग्रह तृतीय संस्करण 1978,तीसरा आदमी,मन्नू भंडारी पृष्ठ 52

काम संबंधों का यथार्थ और समकालीन हिंदी कहानी–डॉ.वीरेंद्र सक्सेना पृष्ठ 63

संपूर्ण कहानियॉ,संग्रह,घुटन कहानी,मन्नू भंडारी–पृष्ठ 156

मेरी प्रिय कहानियॉ,संग्रह,शायद,कहानी–मन्नू भंडारी पृष्ठ 119

संपूर्ण कहानियॉ–संग्रह,अकेली,कहानी–मन्नू भंडारी पृष्ठ 119

वही –दोन कलाकार –वही पृष्ठ 65

वही खोटे सिक्के –वही प्ष्ठ 149